इनसे सीखो

■ आरती अजवानी
टाईप–1 डायबिटिक

नाखून : *इतने न बढ़ो कि काटकर फेंक देना पड़े।*
कैंची : *अनावश्यक बातों को सदैव काटकर फेंको।*
खुरपी : *बुरी आदतों को उखाड़ते चले।*
चंदन : *दूसरों के कष्ट हरने के लिये स्वयं घिसो।*
कोयल : *मीठे वचन से मोह लो।*
समुद्र : *अपने मन को विशाल गम्भीर बनाओ।*
सरिता : *प्रत्येक परिस्थिति में सतत् प्रवाहमान रहना।*
वृक्ष : *फलों से सम्पन्न होने पर भी विनम्रता से झुकना।*

माँ

एक माँ की बच्चों की ज़िंदगी में कितनी ज़रूरत है। यह एक इन्सान भली–भाँति समझता है। जब बच्चा जन्म लेता है और वह पहली बार जो शब्द बोलता है वह पहला शब्द होता है ''माँ''। और यह शब्द सुनकर माँ का हृदय फूल जाता है। वह हर चीज़ जिस पर उसका हक़ होता है वह अपने बच्चे पर त्याग देती है। यही शब्द इस कविता में व्यक्त किये गये हैं :–

फिक्र में बच्चों की कुछ ऐसी घुल जाती है माँ।
जवान होते हुए भी बूढ़ी नज़र आती है माँ।
रिश्तों की गहराईयों को समझाती है माँ।
चोट हमको लगती है, दर्द महसूस कर जाती है माँ।
प्यार और ममता का ख़ज़ाना है माँ
बिन माँ कैसा जीवन,
पूछो जिनकी गुज़र जाती है माँ।
लोरी सुनकर सोते हुए बच्चे की तकलीफ में,
रात-रात आँखों में गुज़ार देती है माँ।
अल्लाह ने जब पाया मुश्किलें हैं हर जगह,
नियामत बनाकर पास हमारे भेजी है माँ।